ॐ नमश्शिवाय ॥ अथ प्रत्यकव
मुविषयापगाङ्गि नाय लिखय
लिंगिपुलयमस्नव कानवाय ॥
ल धौम्रनविक्षिगका यमणात्तहेप
उर्यैनेनधिभूवन प्रतवालिनवा ॥
नादिकेश्वनजवावा ॥ अनयनमिदप्रक्षे कृष्णाग

१

ॐ कालमृत्युप्रशमनं सर्व्वव्याधिनिवारणं ॥ पन
गकृतप्रशमनं सर्व्वविजयवर्द्धनं ॥ सर्व्वदेवग्रह
दोषघ्नं सकृतीक्षुफलप्रदं ॥ सर्व्वशान्त्यादिकाना
र्थं धर्म्मार्थकामिमोक्षदं ॥ अथ काद्र्द्धनस्था
नो नागयज्ञोपवीतकः ॥ वज्रमूलस्थउर्द्धदृ महाकाल

ष्टिनः ॥ वनावर्त्तस्थो वनदः देवदेवो महाबलः ॥
त्रैलोक्यनमितः श्रीमान् अजितमाशुकर्त्तासुस ॥
र्व्वविघ्नविनाशनं ज्ञानपद्मनुमध्यमा ॥ पीतवर्ण्ण
मादिवर्णेन हिंस्रवर्णेन शोभना ॥ ललाट
तिलकापेता वज्रपाद्धधारिणी ॥ त्रिशूलधन

२ धनादेवी, सर्व्वालंकार भूषिता ॥ वज्रकीलन नृपेश,
लोकनाथ महापंडित ॥ लोकनाथ सन्तुष्टा, उमादे
वी वन्दपद ॥ साकादाग व्यन्तृपेश, लोकेनाभिनन्द
ज्ञता ॥ श्रीकरुणा कृपभीता, एकान्तलोकवत्सला
॥ पद्मनाग भूषित सौम्या, रक्तमाल्यानुलेपनः ॥

श्रीवालीवालनृपेश, वज्रकुठ शिखिवाहनः ॥
पूर्णेन्दुवदनः सौम्य, त्रिशिखः लोकिसंयुतः ॥
शक्तिकामाग्निरूपाद्य सम्रहृत्सु नाग्निनः ॥ का
लिकेयामहातेजा, वज्रदानेकनत्यनः ॥ श्रीकिंकणी
तु भनिल्पे, वर्णसोर्व्वीवलप्रदा ॥ श्रीगवस्तुपनी

२ धान, स्वरूपं कनक सुप्रभं ॥ स्फुटत्कां महायोगी,
रुजाङ्गं हि नमानसं ॥ शूलपाणि महाप्राज्ञं, न
दीशं ॥ शिवलाविनं ॥ शिवाईनयनो निर्दं, शि
वध्यानेकतत्पनं ॥ भक्तिकनाशुभभक्तं, धर्म
वमतिमूलकमा ॥ महादनो महाकायं ॥ विघ्नाङ्कुरनव

यथ्रुविं ॥ एकदंष्ट्राल्कपादवो, गजवक्त्रो महाव
लं ॥ नागयज्ञोपवीतीव, नागनालनलरूपिनं ॥
सर्वार्थसम्प्रदाभना, गर्भस्थकोवनप्रदं ॥ रुद
स्यतनयोदेवो, नायकोथविनायकं ॥ कनाशुभ
महाभक्तिं, सर्वसिद्धि शुभमसदा ॥ स्कन्द नीलनि

४ निरस्थ्युका । निष्कलंकपुला प्रत्यक्ष्य यन४॥ नक्ता स्वनध:
न४धीनाद । ऋक्ष्मी (म नाग सूयन४॥ पापापना दम
उल । मलक्ष्मी मलनाशनी ॥ कनाउम महाशक्ति । म
हाकाली महाबला ४॥ दीनवस्तु पनी धना । कन्यानुपा
स्थिली ऋता ॥ गलमार्गविकाग्रका । पुन्याल्मेनीहृ

नध्यनी ॥ सर्वसिद्धिकरी देवी । प्रसादपरमापना
॥ अशक्ति करणा उमनजीता । सिद्धिमातुप्रयच्छतु ॥ सि
द्धप्रथमन वर्श्रेन । महामहिषमर्दिनि ॥ धन्ये
कं उह्निनला । खड्गधारिसथनिशी ॥ आनकुनाद्धन
कना । सर्वपरवनाशिनी ॥ सर्वमंगल लनामा । मि

५ लिवमाचन उरूर्व ॥ निर्म्मी सनलनीयल, स्वाचक्षि
स्व निर्वं धन ४॥ अति स्र ख्या नि विक्रान्त स्त्यु क्वाल्द से
नि नि र्म्म हा न ॥ नू जाल्स स्र मेघ वीणा नूडे काहि नमा
न स ४॥ साधि स्वध्रम कत्तोवन, धम क्वि मालु प्रय स्क ३॥
प्रवत्युगल सैन्द्र लम, महा दैकोकधानक ४॥ अक्षमाला
र्ध्यि नक्षन ४ स्त्यु कांष लैलुनावन ४॥ वलुपापाय

पहन ना, त्रु स्र हल्ल्यो दि लेम धन ४॥ कना तुमु महा
धानी, कल्याणम नाधर्न पनी ॥ मैं स्वक्र दन्द्र उल्या
र्दं, काल्लुमनकद्वेर्ण ॥ अक्षमालीलिवा स्क
४ स्वर्ध्यक्षा नव्या वक्षि न ४॥ वनु मर्दूर्ख व्यु नुध्या द,
क्षिन ७६ न र्द्वना क्लल ४॥ क्विनि पानि र्दवा दवा,

६

धर्म्मा धर्म्मा कामाक्रम ४॥ ह्रीं श्री वज्रविद्रुतन, तस्मा
द्धर्म्मो जगत्सुतु ४॥ बुद्धा बुद्धवन ४ श्री मान्, कनातु
ममभ्यक्तिके॥ नन्दा सुलजाहरन ती, सुश्रीलासुम
नागथा॥ अव ४ शिवपुन्य पद्मर, क्लिमा ४ कृष्णकुमा
क्लिकं॥ पद्मासन ४ प अनिल, मुखुर्द्दन पद्म जि ४॥

कमलुलूधन ४ श्रीमान्, देवगर्भ बुद्धिन ४॥ शिव
आनन्द कपन म ४ शिव सद्भाव होविम ४॥ ब्रह्म
दनदिध्यान, वृक्षा अन्धि कना तुम॥ मार्कासनवद्य
गुह्यां कु ४ श्री खवकुगदा धन ४॥ आमन ४ पीतास्य न
धना, महावल पनाक म ४॥ वद्ध दहोलमादवा

१

माधवो मधुसूदन ४॥ शिवप्रसादसम्पन्न ४ शिव
ध्यानपरायण ४॥ सर्वपापप्रशमनपक ४ सर्वसत्वनि
ष्कंटक ४॥ सर्वदा श्मशानिकासेवन, विष्णु ४ श्मशानिक
नातुम ॥ अर्हक ४ श्मनक नृपीव, पिउडकाल्कदपा
लिक ४॥ दिग्मसाइकगवामाल्लु, सोम्यविलक ४स

माहिमा ४॥ सन्हलेसावन ४ श्मनिकि ४ शिवध्याने
कविकक ४॥ श्मनिंकनातुमनिव, महक्क ४ शि
वलोविन ४॥ विंक्षानाचानसमस्थश्री, महामाघ
प्रवर्तक ४॥ वक्रुदहस्वनृवीच, सद्यासासनेषे
न ४॥ जितन्द्रिय ४ समाधीश्रा, पात्वीवन स्रेषि

चित्त४ ।। वनदान्तपालिन्तु, ज्ञानध्याननतात्४ सदा
।। योगद्दष्टि४ समायुक्त४ शिवध्यानैकमानस४ ।।
दृढ४ स्वलोवद्वृन्द, अंकिमाशुप्रयकत्तु ।। पीत
वस्त्रेन देहेन, हाभस्त सुविचित्रना ।। सर्वालंकृत सुन्द
री देवी, विजयाजयकारिणी ।। शिवाई ननगा

नित्यं, शिवज्ञाप्यपकायचा ।। धनिनीलोकमाता
च, नित्यै नर्त्तकनातुमा ।। पद्मनागप्रलदेवी, च
तुर्वेदन पद्धजा ।। अक्षमालीकिरकना, कमण्ड
लुधनाशुला ।। ब्रह्माणी सौम्यवदना, शिवपूजा
पनापरा ।। अंकिकनातुमप्रीता, ब्रह्मणादे

नमर्प्रदा ॥ हिमशैलनिवासदेवी महावृषभवाहिनी
॥ त्रिशूलहस्ता वरदा नाम्ना रुद्रलक्षिता ॥ चतुर्भु
जा वृषध्वजा सिंहआपापहारिणी ॥ ब्राह्मी हंसउ
मस्थिता रजतानिलपद्मला ॥ मयूरवाहिनी देवी
सिन्दूरारुणविग्रहा ॥ शक्तिहस्ता महारूपा सर्वाल

कानलक्षिता ॥ रुद्रहस्ता महावीर्या रुद्राक्षन
नगासदा ॥ कौमारी वरदादेवी शक्तिमानुदया
तुम ॥ शंखचक्रगदाहस्ता श्यामापीताम्बरप्रिया
॥ चतुर्भुजा गारुडयाना वैष्णवी सुरपूजिता ॥ दि
वारुणपत्रानिखी. शिवेकाहिरमानसा ॥ शक्ति

१०

कना तुभ नित्यं सर्व्वाशून विमर्द्दनी ॥ वनाहद्याश्म
विकप वनाहवन वाहना ॥ श्यामावदनाविपूला र्वी
खवक्रगदाधना ॥ नर्कुपकीसदाविघ्ना त्नर्द्धय
कीसदाशिवं ॥ वानाहिवनदादेवी क्रमानाथंद
दातुभ ॥ ऐनावनगजारूढा वज्रहस्ता महाव

ला ॥ नगर्त्तोतुहृद्भुष तखिताकनकप्रभा ॥
सिद्धगंधर्वनमिता सर्व्वालंकारभूषिता ॥ ऐन्द्रीदेवी
सदाकालं श्रीअकिमाहु कनातुभ ॥ उर्द्धकेश्याकोटना
क्षी निर्म्मीसाम्नायूवर्द्धना ॥ कपालवदनाघोना
खड्गकट्टानकाध्यना ॥ कपालमालिनी कुद्धा रव

११ दुंगवनअनिही ॥ आरनकाङिगनयना गजचर्म्मा
वयाञ्छिना ॥ नानाना(ञ्जवीणांभीषणक्वाननिवा
सिनी ॥ शिवानुपशुधामेश ॥ शिवानाद्वल्पकनी ॥
चामुण्डाचण्डभूतप्रेत ॥ शिशिजतासनेनतु ॥ सर्वपनवि
अभयं महानंकाकनातुम ॥ आपीनहस्तीनेश ॥

नानाहरनत हस्तिना ॥ आगर्भ्यकाविप्रानि ह्नल
त्वद्दीगधविही ॥ श्रीकासनामहावीना सर्वपा
पवनअजिनी ॥ लभ्माखीवरदादेवी अभिमाणुकरी
तुभ ॥ आकाशमाणवादेव्या कथन्या लोकमाणनम ॥
हन्तानीमाण नमः सर्व्वा कथन्याहनमाणनमः ॥ सर्व्वा

मा रु महोदयाय४ स्वापद्मस्थग्रपाणये४॥ अग्निज्वाला
वलिज्वालि बलिकामामहोदयाय४॥ डाकिनीका महावी
र्या डाकिन्यै हितनामनमः४॥ ओं आं ह्रीं क्रुं ह्रीं त्रुमनिर्ये
मानवस्त्रवपूजिताय४॥ अथ डाकिनीडकर्म्मालेख डाकिनी
ननिवासिने४॥ सौम्या ॐ वकुथकवि स्कातस्का

ननिवासिने४॥ मानमा डाकिनीपाथु गणनामधि
पाथुय॥ विघ्नहत्ताकृपावान्यः दिति दिक्रुसमा
श्रिताय४॥ सर्व्वसत्वप्रीतमनसे४ ॐ गृहेश्वकुमवालि
॥ सिद्धिवाहो पयकनु पवय४ पतुमसिदा॥
ॐ ह्रीं दि ह्रीं गणथकु वडहस्ता महाबलाय४॥

१३

तु छेदनाकाछेदनविला। कथायेछेदनलोहिता४॥
दिव्याकृतीकलौमाध्यु। पातालतलवासिन४॥ रुद्रा
र्थनननाहस्ता४ आर्किकूर्वकुंभसदा॥ आग्नेयी
यनआ४ सर्वभुवहस्ता निवाद्रिहा४॥ आनकाक्रा
नकविला। कथायेनकलोहिता४॥ दिव्याकृतीक

लौमाध्यु। पातालतलवासिन४॥ रुद्रकृष्णमनस४
आर्किकूर्वकुंभसदा॥ याम्यीदिशिगआयचु। सग
गदनुपाणय४॥ हस्ता४ हस्तविला४ कृष्णा। कथा
येहस्तलोहिता४॥ दिव्याकृतीकलौमाध्यु। पाताल
तलवासिन४॥ रुद्रकाहितवेगस्ता४ आर्किकूर्वकु

१५

मलदा ॥ नैऋत्यांधुगलप ८ कुना. नाकना ८ रक्तपा
लय ८॥ स्त्रीनीलाका नीलनिला. रुपावैनीललोहि
ता ८॥ दिव्याकनीकुलोमाधु, पातालगलवाहि
न ८॥ सूर्ड कध्यान निनना ८ आग्निकूर्दकुमसदा
॥ वायव्यां वेगलप धु. सतांपाक पालय ८॥

स्त्रध्यमाका ८ श्यामनिला. रुपावैश्यामलोहिता
८॥ दिव्याकनीकुलोमाधु, पातालगलवासिन ८॥
पनमध्यश्चूनन ना ८ कालीवानाग्यमुलमं ॥ वायव्यां
लुगलप वै. सतांधजपा लय ८॥ स्त्रीपीनाका
८ पीतनिला. रुपावैपीतलोहिता ८॥ दिव्याकनी

कलौमाध्व, पाताल गल वासिन ४॥ शिवएका
महात्मान, कूर्वं उमम भक्तिकं ॥ उकन स्यीग
लायेउ, सर्वलिपि पाशचय ४॥ अवला का ४ ए
दलनिग, कथावे अवल साहिगा ॥ दिव्याकनी
कलौमाध्व, पाताल गल वासिन ४॥ शिवएकि

पनामई, कर्मकुर्वं उमम सदा ४ उलान्यादि शिगल्म
यतु पुष्प कांब्लपानय ४॥ हस्ताक का ४ हस्तनि
ग, कथावे हस्तलाहिगा ॥ दिव्याकनी कलौमाध्व
पाताल गलवासिन ४॥ शिव पूजा समाप्त का ४ क
र्मकुर्वं तु मम सदा ॥ अभ्यलोग गक्षयतु, सन

१८

नैस्तुलपाश्रय ४॥ धूम्रा धूम्रनिला स्तत्र्व नथा वे धूम्र
लोहिता॥ दिव्याक्रीनकहो माश्च पाणालगल्ल वासि
न ५॥ सिर्वक्रुर्वक्रुभ नित्य मलक्ष्मी मलनाशनं॥
तुर्द्धुलागगनशापेतु महावलपनाक्रमा ६॥ स्त्रस्रा
स्त्रनिलोद्भव नथावे स्त्रस्रलोहिता॥ दिव्या

क्रीकहो माश्च पाणालगल्ल वासिन ७॥ सीवप्र
जासमृ धूक्रा अस्तुर्नाशाय क्रुवा॥ नगगस्थम
हात्माना महा वलप नाक्रमा ८॥ सिर्वसं पूजय
त्नेनवलिं गर्भविधिनि ८ क्रियतू॥ नगदवीनामहा
त्मान १०॥ किमाश्चवलीं त्रिदीग॥ पयक्रसाणुम

१७

अनीऋतानीरुद्र विरूपाक्ष नमः ४॥ अमन्तावनीना
मपूनी पूर्व लागव्यवस्थिता॥ विद्याधरगण
कीर्त्ती सिद्धिगन्धर्व सेविता॥ नरत्नाकान्त्रवि
ना महानन्दीप रूप सेविता॥ तदेवपतिष ४॥ सीमा
न्वजहस्ता महावल ४॥ नैरुत्य कुमहस्र प्र. रूप

ऌ ऽऽनवित्ताञ्जं ये नवनादगगजारूढा हेमव
र्णी महाद्युति ४॥ देवेन्द्र ४ सतगिह स्थ ४ पवन
मन्दिर नगष ४॥ सिवश्मानेक सन्यन्न ४ शिवर
क समाश्रितव ४॥ शिव प्रथम मपन नमः ४ कनोरु म
मनं क्रिकी॥ आग्नेय दिग्विलागेउ पूनी न

१८

आवन्तीपुरा, नानादेवगणाकीर्णे तत्रक्षाला
महाक्षला ॥ तत्रक्षालापतीर्त्तीर्थमादी कोर्गमनस
म स्नूनिष्ठ ॥ लागि कद्दहिनी देवी, क्षालनष्ठ पापना
मनष्ठ ॥ शिवपूजा जया शुक्रष्ठ शिवस्मरणश्च
विनष्ठ ॥ अभक्तिकनापुमदेव, रूथा पापपासिकु

यागवेदस्वनीनामपुरी, दक्षिणेनयथवाक्षिणा ॥ स्न
नास्नानष्ठः स्नानीक, पितृतर्पणनमलयागोकुन्तु
नीलं संकाशम, नकाकायनलावनष्ठ ॥ महामहि
यमारेष्ठ कृमस्र वक्त्र स्वर्णष्ठ ॥ अक्काथम
हागराष्ठ शिवधर्म्मपरायणष्ठ ॥ शिवपूजा सम्रु

१८ मृत्युका ४ कमाना न्मं दत्तकुम ॥१००॥ मेकर्थ यतु
दि (भे लाय् पुनी कष्ट नि विष्णु नाथ॥ महान का
गन्धकारी भुं, पिशाच तं गर्भ कला ॥ मतजी मृग
र्ग काले, नकुस्य वकुतख ना४॥ रवजूपाली वंहा
न्कता ४ कनाल वदना कुल्लल ४॥ नकंद्रा नि ऊंगि नि

र्यि, सिबाईं नन ग ४ सदा॥ कनोकुम मला ला न्हिं, सि
वल कि समन्तस्त क ४॥ पाझैमतु दि (भेलाय, पुनी
कुद्र वनी न्हुगा॥ नानागन समाकारी भुं, नानाकिन
न (भेलि गा॥ मत मो कि कर्ल का ४ यनिबिद्रू ल
लाचनथा॥ शुक्रवकुपनी धन ४ पा४ह क्वामहा

२० वल ४॥ वदन ४ पञ्च आरेह्या। सिव काहि न मानत
४॥ नागऽभिकाहि सीतापी। निर्क्रोध पशुपति सदा गवा
यथा हि त्रिलोकनाथ। सूनी गन्धर्वनी लुला॥ ऋषिसि
द्रु गन्धर्व कीर्ति। हमरा क्र न गान ना॥ सतताप्रसद
हस। कृष्ण पिङ्गललोचन ४॥ पञ्चगाफारू चालीना।
ध्वजरूप वक्षाय रक्षयत ४॥ पवन ४ पञ्च महादेव। ध्यान

म ४ वदन लालित ४॥ नमो नाग्रीव सीहनी कि। कनोउ
हगौ मम॥ महादेव नामपूनी। बाल्कन समग
हला॥ अनेकरूप कसी कीर्ति। नानान स्वापल्लो
लिना॥ सतत देवा महा कृपा लि। प्रभु गवसदहबिन
४॥ जस्वा कर्णाहि गजा ४ पञ्च पिङ्गललोचन ४॥

कृपावनदऽ श्रीमान् हनुपादाङ्गनन्दनः ॥ अं किंकर्ता
तुमऽ अस्कऽ जीतऽ पीतनधगता ॥ यत्सेवनी पूतीनम्या
ऽसम्पादिनि लोकिता ॥ नानागणसमाकीर्णु. नानामूत
हमालया ॥ कतऽ पोकारपर्यन्ता. विनोदम्या महाहलो
॥ कप्रमोक्षिकऽलंका ताऽ तास्म हृदू हृगा (स्रवऽ ॥ (जिन
तऽ सन्कहू पात्मा. अङ्कमालाधनम्सदा ॥ श्रीसनऽप

यमादि वऽ सर्वदेवा हमा हनऽ ॥ स्विज्ञानयोगिनीर्वि
व. सर्वदेवनमस्कृता ॥ सोऽपि सर्वाल्मलाइन. ऽसकिं
मात्रुकर्ता तुम ॥ कल्लीकिप तुवल्लीक. हल्लीकान
वहलिकिध ॥ देवादित्य जलातुकाऽ ऽसकिंकर्ड तुम
सदा ॥ महल्लीकिकनल्लीकि. नपाल्लीकल्किगात्युधा ॥

र्वदिपम्हं हिनादेवाउ शिवर्कूर्छकुमसदा॥ सत्यलोकं
वयदेवाउ स्वउला ब्रह्मविष्णु हा॥ शिवरक्काउ स्वमनसा
रूपीनिर्वाणपकुम॥ गिविक देवइन्द्रजेखु. वनबूनि
वसकिप॥ इन्द्रार्चनपनादेवाउ अशिंकूर्छकुमसदा॥
भनवद्धाशगुलेनरा. देहेनामलगाउहला॥ सनत्खणी

शिवरक्का अभिंकिमणुद्द नातुम॥ वान्नुखामीकन
काया. स्वनाउकनपल्लवा॥ शिवरक्कातु ग्रादेवी. श्री
मह्लशिंदुरतुम॥ बान्नुनामस्वचन्दुल. विखितद
कनकेहला॥ इत्यादेवी शिवरक्कां. सर्वकामदरा
तुम॥ हालरनस्त्रविचित्तुल. गाल्कना हलगनसा॥

अपनाजितोताडनना कंगीरुविजयीमम ॥ हिंदून
नागनकीस बल्गुनायनलोचन ८॥ सहस्रकिनस
८ श्रीमान् सकलशिखिवाहन ८॥ कमलद्वयर्षपूर्क
स्नामनन नमस्तुत: ॥ गतकिमाली भगवान् लि
वपूगाउँनिनत ॥ कनातुमे महाध्याकिं गुहपीजा

त्रिवाशिखी ॥ इनदगयानकना, क्रमूताध्यनशी
तलब८॥ सोमस ८सोमा नलांचन गुहप्रीतो व्यपाहतु ॥
महाभागानिरोदक ८पनिपिङ्गललोचन ८॥ अ
मनेकस्तुसती, कूडसीपूज्यनगत ८॥ कूडसीग
वसीपत्नी, इडध्यानेकमानमस ८॥ गुहप्रीतायपीस

र्व निर्म्मगयतु मत्तदा ॥ कुङ्कुमकविदृहन, नाथा
पाकर ॥ शिवस्य कौमुद्र श्रीमान ग्रहपी
डां व्यपोहतु ॥ धोगवामी कर्म छाया, सेर्वध्न्यान
कमालया ॥ रहस्य पिस्सदाकाल, मी अकाशीन
गत्सन ॥ सा विम आ कविकन, पनमनहमा हि

[illegible]

प ॥ सर्वकानपन खूनि ॥ निष्नन ॥ शिवराको
ग्रहपीडां विनिर्द्दिश्य कनाउ विकृप समदा ॥ हिमकु
न्द द्दउला ॥ स्त्रनदेस्य हु प्रणिता ॥ मुक ॥ शिवा
र्चन रता ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥ नील पुष्पनानि ॥
श्रीमान् सो हक पीम हावल ॥ शिवपूजापनारा
कृ ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥ धूमाकाना ग्रहकेतु, ने

ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥ ८ ॥

अन्यो दिलिसंहिताः४॥ वन्दुलाणीव विल्वीदलं
सैव नैवेद्य मूलीकता ४॥ पलालधूमसंकाशो ग्र
हपीत पवनः ४॥ धारदंष्ट्राकनालीव, कनागु
विडयमम॥ खर्वटकहकण्ठ, वनलेखवनदः
शुता ४॥ शिवलकल्लोअग्रजन्मा, ग्रहपीडीव पा

हतु॥ जनग्रहामहास्नाना, महेश्वार्चनलोविना
॥ आकिंकुर्यकृष्महत्सा. सदाकालीहिताभिधा ४॥
ववधूवालवर्जेव, कोनवकेलिनश्रव ४॥ वनिषि
द्धिस्थाकिंस्तुधा, नागद्वलक्रूनिर्नवव॥ करस्थानि
दलोनानि, शिवेलोग्म [illegible] लिन ४॥ शिवपूजा

रिपुकारि, थ्व किं कूर्वकुंभ सदा ॥ मूख यस्य स्थिता
मृत्यु, दष्ट्रिन्त्रीम महा बला ॥ सम्भूरवाधि प्रकानी व,
दूर्छ्वविजयं कनी ॥ शिवराकिपना पूर्ण्धा, कूर्वकुम
म थ्व किंदा ॥ दुतीपाया स्मृगा नारी, मदमुष्टी उग
थ्व दिवा ॥ दथम्वी नारीतागे व, बउर्द्धं थोगथ्व

दिवा ॥ वउ थ्वं विस्मृ गानारी, वहस्मीवत थ्व दि
वा ॥ थउ कादथ्वं स्मृतानारी पूर्णमा स्यागिथ्व दिवा ॥
उनाविरूयअरवाता, कुक्कुभ्रुकूतमपुता ॥ कु
र्वकुंभलक्ष्मवना ॥ थ्व किंवपनं भस्थिती ॥ भूमावा
स्या महापूरंध्वा, पितृदेवसमान्विता ॥ थ्व किं उरुप

२७

नमो पूर्ण्णे, शिवस्वरूपमात्मने ॥ शिवतत्त्व समा
प्रका, करोतु मम शं अनिर्यः ॥ प्रतिपत्तु महाशंभ कौ,
ष्ठिनी पापमनोहरा ॥ तृतीया च तिथि ४ श्रीमान्,
चतुर्थी च महाचण्डा ॥ पञ्चमी नाम शंभकात्मा, ष
ष्ठी च तिथि चन्द्रमा ॥ सप्तमी तु तिथि ४ पूर्ण्णा, अ

ष्टमी च महाबला ॥ तिथि ४ मूलरतन चैव, पापहा पर
मात्मना ॥ नवमी तिथि नक्षत्र, रुद्राणीयाप्यनिकी
र्त्तिता ॥ दशमी चैव तन चैव, तिथिर् एकादशी तथा
॥ द्वादशी च शंभकात्मा, तिथि चैव त्रयोदशी
॥ चतुर्दशी महावीर्य्या, तिथि ४ शैक नमस्कृता ॥

१८ पूर्णो मापरि पूर्णात्मा, नित्येमनको कुला ॥
समातुं गुलात्मान, स्त्रियपच्छुक्रमनत ॥ पकाद्य
पसपच्छ्रम, वन्द्रुगत्योन्नमबिनठ ॥ ल्यक्रिकृ
र्व कुमनिर्य, निवाच्छानू विधायिनठ ॥ विप्कृ
ठ प्रीतिनाप्रथ्या, त्त्रोतास्मठजोतनकथा ॥ भरति

ग क्रुठ त्रक्रमीव, प्रनिठ वूलकत्येवव ॥ गन्कोद
ङ्गिर्ज्जवत्येव, व्याघा गात्तर्वीहास्तथा ॥ वज्राठ तुङ्गि
र्व्यकीपागी, वलीयान्यानिघठ जीवठ ॥ सिङ्गिठ सा
धठ गुल्गुलुक्रा, उप्त्रेन्द्रुत्युवंद्धतिठ ॥ वन्नुस्पत
गा [illegible] त्येस्वान्ना, पागल्पेन महाबलाठ ॥ गि

वलोकिपना ४ सर्वेशि वाह्ना त्वविश्वयिन ४ ॥ श्री
क्लिंकृर्वकुमनिर्ये गथा क्लिन्त्विमनाशनी ॥ कालिका
परमादेवी अहिली त्वचित्रानना ॥ श्रीमन्मृगाक्षि
नाम्ना अजावयनम्याकाला ॥ पुनर्ब्रह्मस्वरूप
या अनन्तबाधमहाबला ॥ नक्षत्रमालिनी क्षुता ४

जलमाला वलोकिता ४ ॥ महादेवाक्षुननगा महादे
वानुलाविता ४ ॥ पूर्वलिंगेक्षिता क्षुता ४ श्रीक्लिंकुर्व
कुमसदा ॥ मथा सर्वगुलोपमा पृथ्वीवैवस्वलु
ती ॥ कुलिनाहल्लुमीवेव हस्ताविश्रान्तये अकमा
॥ स्वाक्षितिभैरवाबनदा दक्षिणक्षानसिन्धुवा ॥७

३०

र्थ्यकीवनकालेदेवीत्रिभुवनभर्त्त ॥ नक्षत्रमाल
नीक्षम क्कनलपानकीर्त्तिता ४ ॥ ममाविभ किर्ड
निर्यं कृर्षकृ शिवगादिना ॥ अनुनाथमनाथ ह्य थु
मूलाश्च डिवलाञ्चिता ५ ॥ भूर्षीमाटामहाबोधी यीं
अगमा ठावकिनाप्नुता ॥ अरिडि वामनक ६ श्री

वरभवनमाह्वला ॥ उना ४ पशिमनी दिका जागके
नागमूलेयथा ॥ ४ ही आर्न पूजयक्षे ना ४ सर्वकालबु
लाविना ७ ॥ अकिंकर्म प्रकृर्धन्तु सर्वलोते समाश्चि
ना ४ ॥ धनिक्षा नानालिया खेव पूर्वलोड पनाथा ॥
उलेना मकडनवथो अभिनीयमनर्द्धिका ॥ तनदी

वमहावीर्या, नित्य दकेनगाथ लिंगा॥ शिवार्च
नपना निर्षे, शिवयाथे कमानसाथ॥ ध्याक्किक
र्ब कुमनिर्षे, सर्वकाल सुलादयो॥ यसाव वाबि
पथलिंग, धनु दीकमगाविनं॥ पूर्वं गावयर्यग,
शिवपूजा पना यथ्याथ॥ ध्याकिकर्ब कुमनिर्षे, शि

व लिंगपनायथ्याथ॥ कन्याव पन मादेवी, सकन
श्वाशि बुद्धिमान॥ त्रोदकरलागेनु, पूजयकोस
दाशिवं॥ लक्ष्म पन यथा निर्षे, श्याशि कर्बकुम
सदा॥ मिथुनथ्य तुलाकुम्भ, यात्रिमन ध्याव लिंगा
॥ शिवपादर्च नयकाथ कम मकर्ब कुम सदा॥ क

कौण्डब्र त्रि कामीन, ऊग्रस्फुतनवनाहिता ः॥ पूजय
न्ति सदाकालं, सूर्ये भुवननायकं॥ श्रीं किर्ण कुमारियं,
लिवाल्हानु विधयिनः॥ अगस्त्यः शक्ति विश्वामित्रः
वाकाः परमाकुलाः॥ श्रीकृत्तादर्श पन्ना, श्रीं कि
कर्ण कुमलदा॥ काश्यपागमलवामगर्ग, विश्वा

मित्रा महामुनिः॥ मरद्वाको वशिष्ठश्च, मार्कण्डे
ः पुलहः क्रतुः॥ नारदो भृगुरात्रेया, गौतमश्चा क्रौ
ञ्चि वामुनिः॥ वाल्मीकः कौशिकः कण्वः शाक
ल्याथ पुनर्वसुः॥ माललीकायन ऊर्ध्व यो याज्ञ अग
यास्य पापमहाक्षताः॥ लिवश्यानार्थ मीयकाः

३३

अर्कीं कुर्वन्तु मंगलं ॥ आर्य्यप्रज्ञा महापुण्या, तथा
आर्य्य कुमारिका ॥ शिवार्ज्जुनपद्मानित्यं, अर्कीं कु
र्वन्तु मंगलं ॥ सिद्धाः सर्व्वे सिद्धगणपसा, तथा आर्यविद्या
धरप्रहाः ॥ महात्मानो महात्मानो, गरुडाश्च म
हर्द्धिकाः ॥ महाब्रह्मनपना ब्रह्म, महाबलपादप्र

काः ॥ सिद्धि मार्गं प्रयच्छन्तु आशीर्व्वादपनाय
मः ॥ नम् विद्यते यानत्ते इन्द्रः कल्प्तोर्महाव
लः ॥ महानागाधिपविद्याराः, दैत्याः पन्नगवीर्य्य
वान ॥ नागकेश्वनदेवस्य, सिद्धिप्रज्ञापनायवलः ॥
वलवीर्य्य प्रमाक्षिप्ती, प्रयच्छन्तु महर्द्धिकाः ॥ महा

जं काल्यग्रीव ॥ उज्ञाहाव्य कृज्ञादक ॥ गानकी
ग्नि स्तबादेत्य ॥ कालनेमिर्म्महाक्र ॥ ७ नदेत्या
महात्मना । शिवस्य कावला विर्ग ॥ पृथ्वीवलीगध
वीर्य प्रपद्य तुस्तवादयो ॥ विनावना हि नंषाकः ॥ तम
र्वध्य तलानकः ॥ नष्टस्नन्द ॥ तकृदण्ड । देयानवा

कस्तथा ॥ गोवलवपनंतांशु तयक्तिं सर्व्वतालिर्वी ॥
सतनीवत्सुले लान ॥ पृथ्वीं कृर्वं कुमसदा ॥ देवपत्या
महालाम । देवानीकन्यकाः ॥ शुलाः ॥ क्रमान श्रीवदे
यानी शमक्रिं कृर्वं कुम सदा ॥ आनर्कं नशवीनल न
काकायगलोवन ॥ महालागक्ष्मागापः ॥ लत्वाकृ

कालाञ्जुन४॥ अनकोनागनाउद्छु४।मिवपादर्ञ्जे
नेनन४॥ महापापविर्षहत्या।ओं क्रिमाञुकनाउम
॥ त्त्व्येगनउकहन। ल्लेगाल्यलेलेवन४॥ वानू
लोगाल्गाटाप।लानवानूधितबबा४॥ वानू क्रिर्नीगना
उँ ड्रा। नउ४ क्षुगापनामगानू॥ महापापविर्षहत्या।ओं

क्रिमाञुकनाउम॥ आतिवीगनदहन। विस्हूनकाग
सेपद॥ नैरला वागिदाकनकाख क्रिकलोञ्जुन४॥
नागनाकुककउ४ओमानू। नागकाघ्यालमन्द्विन४॥ कना
उम महाओं। क्रीं। सर्वदोषविनापहं॥ आतिकृञ्जुनवल्लु
न। ल्हेलाविकटमसकउ४॥ काल्लुलेरवा।ज्यापनाराधो

३६

न दृष्ट्वा पूजयेत्पातः ॥ कर्क्कोटको महानागः विषदर्प्पवलान्वि
तः ॥ विषजं [illegible] निर्म्मलाय [illegible] कनाशम [illegible] नद
दन [illegible] पापनाशनम् ॥ [illegible] श्रीवासुकि
[illegible] ॥ [illegible] महानागः [illegible] नम ॥
[illegible] महापापविनाशनम् ॥२००॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

ॐ [illegible] महानागः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] श्रीमत्कमलला
[illegible] ॥ विषदर्प्पवलान्वि[illegible] श्री[illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥

ला विर्षमला घर्न, त्वाॐअर्क्किं कनाउम॥ अगिधान्वलई
हेन, वङ्गाई हगवल्कक०॥ तकलागहलाटप०ञ्जुहलक
ललकिग०॥ क्वालिकनागवाजभो, निर्वेहवपनायसं०॥
अपहत्यविर्षधार्न, कनानुमम ॐआक्किंकं॥ अकनीक
वधनागम० धनागमहवर्न हौस्त्रिगा०॥ गिविकदनइ

नैष्, धनागमनुविस्त्रिगा०॥ पागलयास्त्रिगा
नागम०हर्षयतसमाहिगा०॥ नडपादाङ्गेसका० कृ
र्षकुममॐ अक्किंकं॥ नागिन्धा नागकन्या०्य, गथनी
गक्कमानका०॥ लिवतका० हमप सँ० ॐअक्किं कर्षकु
मसदा॥ पञ्चडे नागसँल्काने, कीर्तपक्कुलयादपि

४॥ नास्य तस्यो हि सक्ति, नापि शंक्रुसगासदा॥ गंगाच पु
ण्य महादेवी, यमुनानर्मदानदी॥ आवंतीका विकावेनी,
वनंदविका गया॥ महेंद्रनापनिदेवी, पचमर्णीमहे
ष्यनी॥ पूर्णपाक्षिसदान ष्य४॥ सिदंसहावरागविता४॥
आंकिकंदर्किकुम नित्यं, गयावापपाप निकर्ण४॥ सिद्धि

मानुष्यकन्तु, सर्वविघ्नविवर्जिता४॥ चन्द्रलाभ
महापुण्य, नदीसहावनीजुत्ता॥ सनपूगंकेकी
ष्ठा, कौशिकीवसनस्वती॥ लोकनशोसमलाभ४
शिवपादार्द्धनेनता४॥ आंकिकर्द्धकुमभीता४॥ शि
वध्यानैकमानसा४॥ नेनऊनानामनदी, ऊआन

३९

श्च अपि मगानन्द ॥ मन्दाकिनी वनमा, गया समञ्जिहिता
गुला ॥ उगण्याअन्यावरह वी, उविदिव्यकनीकमम ॥
कुठार्द्धनयनान घ्र ॥ कर्द्ध कुमम श्च किकै ॥ महावेगु
वलोभेद वी, यकनाशा महाड्रिक ॥ यककोटिपनीवाधा,
यकलस्थ्य यर्म ध्रुग ॥ महाविलवसंपन्नो, हनपाद

र्द्धनन गत ॥ हनध्यानैकपनमो, हनपादनमूलम ॥
श्च किंकनोतुम प्रीत ॥ पवनवणायमाकम ॥ माहित
डी महायका, मलिनलविलविन ॥ मनोहनेश
हानेश, कलूलनननाक्षणी ॥ यकलीयककन्याति
॥ पनिवादिनाविग्रह ॥ कुठार्द्धनयना पूक ॥ कनी

उ समम आलिकी ॥ हवीया नामयकंद्रा. मलि कुल्नुलह
खितव ॥ ललाटे सपहन, ओहतमनविनाकुल ॥ यकं
यकसमाकी लेनुं. यकंनं नित विनहव ॥ मिदमूजायना
हकं व कनातु ममओलिकी ॥ पीचिकानामयकंदुव,
कलिकाकटकों द्रुलव ॥ हाचमहविखिगुल, कमूंयी

विनाकुल ॥ यकंतंधेव समा धुक्का, यकंकाछि समाहु
नव ॥ हमाहुं नय नव श्रीमा न्कनातु ममओलिकी ॥
श्रीमा न्विहल्नु कायका, नानानल विलखि तव ॥
वाहलभकुल्नु लन्दुल, कल्नुलियं विनाकुल ॥
यकंछवमा यकं पति, धंकसनापाहुं वव ॥ हव

४१

पादार्जुन ४ श्रीमा, कनाउ नम मम आकिं कीं॥ हुनना छ्राम
हानगा, पकाय कामिय ४ पत्तु ४॥ दियपली ञुकक
न्ना, मालिका ञुनत्विन ४॥ लिव क्कालिवध्याना, लि
व छ्काय नाय दश॥ लिवत्सादसम्यन्न ४ कनाउ न
मअहंकिंकीं॥ प्रणुतलाउ महायक ४ सर्वालिकानल

खिन ४॥ न तल्पद्दीकपट्टन हस्त्रा कीदविनाकुन॥
धककोटिसहस्रल, पविबानलसं पूनव॥ नूजार्जुन
समायुक ४ कनाउ नम म आकिंकीं॥ विन्द्र्याकपुपनं
दु ४ छ्पनवाला महाचूलि ४॥ वाद्काञुनवर्णु
लि ४ क्लिद्कीला लि ४ समन्विन ४॥ लखिनध्वलदाकाल,

४२

ववनानेकाल्मन ४॥ न्हर प्रजापनालका ४ कनोउमय
व्यक्तिकं॥ अक्तीकगनायेका, पयका ४ स्वर्गवासिन
४॥ निकदनहर्ग्नेब्रू, पयका लूमिवासिन ४॥ अक
नीकंचयका ४ पातालनलवासिन ४॥ नानारूपा
र्यापका, नानावंवधनाक्रपा॥ शिवलक्ताहूमन

ल ४ शिवपूजासमूल्ह का ४॥ व्यक्तिकुवंनुमकला ४
व्यका ४ व्यक्तिपनाय व्य ४॥ पाक्तिल्धा विविधका
ना, रूपायकक्रमानका ४॥ चकक्न्यामललागे
शिवपूजाडुमनमा ४॥ व्यक्तिम ल्ह यन्दिकमे, वलीकन्या
नमूलमे॥ लिडिवा भ्रुउपकक्त, निलमवमस्ता हिला ४॥

८३

मन्दरस्तुलकैलाशो मलयो गन्धमादनः॥ श्रीपर्वतो
महेन्द्रश्च हिमकूटस्तथैव च॥ पर्वताः सर्वगाः सर्वे प
र्वताश्च महर्द्धिकाः॥ त्रिवलकाः सदाकालं कुर्वन्तु
मङ्गलम्॥ जम्बूद्वीपः शाकद्वीपः शाल्मलिः क्रौञ्चद्वी
पकः॥ कौशद्वीपः अन्तद्वीपा गोमूत्र्याद्वीपकौ

महानः॥ पुष्करस्तु महाद्वीपा सप्तद्वीपा महात्मनः॥
कुर्वन्ति नागास्सर्वे शान्तिं कुर्वन्तु मङ्गलम्॥ क्षारोदक्षी
रोदश्चैव दध्यमण्डास्तथैव च॥ सुरोदेक्षुदकश्चैव
घृतस्वादुस्तथैव च॥ सप्तसमुद्रनामानः कुर्वन्तु
मङ्गलं किं॥ सागराः सर्वगाः सर्वे सागराः

४४

सर्वनाक्षिता॥ नन्दउपनन्दनागराजा निर्मलं, करे तु मम शान्तिं कुरु॥
नाकसहस्रमहासेना, वकनाकसहस्रविताः॥ लंकापद्ममल
नागा, वैश्रवण मंडलि सहस्राः॥ नावले नामविख्यात,
लोकाक्षिपालि सहस्रेः॥ सकरनावविशाल, दशकुंडल
लिताः॥ नागार्जुन समागतः कनाउ मम शान्तिं कुरु॥ लं

नावश्च नकालस्य, नागानाम विभीषणः॥ पीनवर्णकुंडल
दहन, वासुकि पापनिकस्यः॥ नानानक्षविविधिशीर्ष,
नाना नाकसहस्रविताः॥ हस्तपुष्पानगा निर्मलं, हस्तध्या
नेकनाधन्नः॥ हरपुत्रसादर्शपन्नः कनाउ विजयदिन
म॥ नाकेशाः सर्वदः सर्वे नाकसाधनानु दिनः॥

नाकुलाधिप महावीर्या, नाकुलाप्रमुख महाबला ॥४॥ कुलखाना
कुलाधिप । अकनीकैव नाकुलाः ॥४॥ कालाल तगलध च निर्म
रेडपना पन्नग ॥४॥ लैनर्व द सस्वरूपकु उगन ल्सा वयुल्हिंगे ॥
गेगसागसादेवस्य, ओं क्लिं क्लुं हुं कुम सदा ॥ नियम द्वालव
गन, यागिन्याथ महाबला ॥४॥ नृधिलैश विविध्रकाना,
ता किन्य प्रमहाङ्किका ॥४॥ नृडञ्जसमनिनगा, नृडप्रज

ञ्चनगा ॥४॥ नृडकाहिगण्गण स्काव कुइं कुमम ओं क्लिं कीं ॥
अकनीकगगा याभ्यु, ताकिन्य ४ह्ल जर्ज मं ह्लिका ॥४॥ बागा
लेया स्कुता किन्या, गिनि दुर्जे ब्रुया ह्लिगा ॥४॥ द्वनी पैला
वनैयस्य, विश्लुलीगहत्यागोलन ॥ गगसागस्यदेवस्य ओं
क्लिं कुं हुं कुमसदा ॥ लवं तगामहानूपा ॥४॥ लबं तगा महा

४६

ना लो ४॥ सर्वे तु नास्तिना ४ सोम्या, सर्वे तु नाम नो तवा ४॥
अकनीके च यलना, यलनादि विसी लिना ४॥ पानालै त
न लै यउ, तनातु नि वि अदिका ४॥ सव दुनी नविमली यस
ति नूलै त स्मता तर्न॥ गंउला न स्य दे वस्य, ना क्लिं क्रई न्
मसदा ॥ ए ना ४ ए ना ॥ ४ स है, ए ए ना ४ स ई ना म र दा ४॥

आलेदीका स्व ए ना ४ ए ना त्र भि ना ४ ना ४॥ अ क
नी कं च च ए ना ४ ए ना ४ स्य अं वा लि न ४॥ पानालै त
न लै ए ना ४ ए त्तु ना ४ का म त्र पि ना ४॥ [illegible] ने लि ल
नी च स्य, द्र व ना य स्व का हन ४॥ गंउ सा न स्य दे व स्य
ना क्लिं क्रई तु म हदा॥ ए पि [illegible] वा म हा वी र्या, अ

४८

ड्डिकर्कोमहाबलाय॥ नानानूपधनाय स्वर्वं, सर्वकु
लवलवाय॥ अकनीकदिओवाय, स्वर्ग्गेधवधि
णवकाय॥ सुपाताले धिओवाम्नु, वकन्नपामनी
गवाय॥ वज्राङ्कुशमकधंयस्य, गंभयनगदाधुता
॥ मकलानल्पदेवस्य, भमिकर्ज्जकुमसदाय॥ अ

पद्मापत्रहस्तस्य, सर्व्वापित्रहस्तकुलाय॥ गर्ह्वालत्र
हायतु, नानाभानत्रहलाम्नुय॥ अकनीकगहाधतु, स्वर्गे
धतुग्रहाकमय॥ सुपाताले ग्रहाधतु, यवहाय सर्द्रा
दिभय॥ करोतु यस्य महानीलं, स्रुवर्णं यस्य धन्वगय॥
मकलानस्य देवस्य, भामिकर्ज्जकुमसदा॥ ॐ शि देवा

दयश्चसर्व। शिवाक्ष्यान् विधायिने ४॥ कर्द्धकु जगत ४ अ
र्कि। शिवरक्षसर्वदा॥ २१०॥ जयात्मयोगसंस्थाय।
जयसौभुद्धवेगस॥ जयादानैकशूराय। जयभोयनमा
कुय॥ जयाल्पमायदंबाय। जयकल्याणकारिणे॥ जय
कदंदेहाय। जयजपापनमस्ते॥ जयलक्ष्मीनिधानाय।

जयकालिविधायिने॥ जयवासुविशुद्धाय। अजिताय
नमोनमः ४॥ जयज्ञानविशुद्धाय। सर्वव्यापिन्नमोस्तु
ते॥ जयसर्वार्थगुह्य। अरूपमूर्त्ते नमोस्तुते॥ जयति
ष्ठलहस्ताय। जयरत्नदृग्निधानिने॥ जयनिर्ग्रलोका
य। जयरूपायते नमः ४॥ जयकामकादेहाय। जयव

४९

ऽार्द्धसविन्नले ॥ जयदेवादिदेवाय, जयरुद्राय वै न
मः ॥ जयत्रिभुवनाश्रय, जयदिव्याम्बकीर्तये ॥ ज
यान्वनाय सर्वाय, जयकर्तुं नमो नमः ॥ जयमोक्ष
प्रदानाय, हरिहरौ हीनकाविले ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रवैद्या
य, शिवशंकराय वै नमः ॥ ॥ ॐ शिवशंकरिका

शर्धी पंचपञ्च कृत्वा पादयोः ॥ सर्वविष्णुपापानि पापा
नि, शिवलोके महीयते ॥ कन्यार्थी लभते कामं, ज
यकामो जयं लभेत् ॥ अर्थकामो लभेदर्थं, न्यूत
कामः समानं कृत्वा ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां, पत्
नीअर्थी यागमानुषात् ॥ यान् यान् प्रार्थयते कामान्

५०

मानव ४ अवलिआदितः ॥ तत्त्वं मीप्रमाणानि, ह वा
नाश्रु त्रिमान वतृ ॥ आनन्दधाय पत्र (ञ्चाम्रतु, सेन्ना
मप्रविभेजनच ॥ ततिक्लिं त्याहवतात, क्कत्वा
(लो ४ पति पृथ्वी ॥ अकर्पभादर्शकाल, मतिर्न स्त
त अभ मन ४ ॥ वायिति नौहि तपस, पूतपो

(प्रकृतिस्थानि ४ ॥ वर्धमानमिदं पृथ्वे, यत्र हि स्य
व द प्रौ ॥ नगस्यानौ गन्धवाध्याक, वागपिता हि
तेव्रा ४ ॥ नाकारे मनस्यगस्य, न मर्त्यो भुवि दि
इयते ॥ न विद्वद्भमर्गदहे, न उतान त्वमूकगा
॥ नाप सज्जरपीगस, नो त्वागस्यास्यैरवेत ॥

नामेवानहनां हृषे लिंपानकदवन ॥ यत्पूर्व
सर्वतीर्थानां गंगादीनां विलोकनात् ॥४॥ नत्स्नूर्व
कोटिगुणितं प्राप्नोति नु स्नानादिकं ॥ दर्शनेन
नागरूपाना मणिकास्तम्भनात्स्व च ॥ अश्ववमेध
लमाप्नोति कोटिकोटिगुणं लभेत् ॥ अर्बुदस्य स्व

ईदशानां महत्त्वाविलोकनात् ॥४॥ जीवदर्शनात्
सार्द्धं सर्वव्याधिविवर्जितः ॥४॥ गोप्रदानेव हता
ग्रहप्तं ब्रह्महत्यादिपातकं ॥४॥ ब्रह्मगतघाति
व मित्रविद्रुहपातकं ॥४॥ इत्यपापसमस्तानां
महापातकनाशनं ॥ अर्बुदस्य दर्शनात्तद्वैष्णवं

५२

दुःखान्तं सर्व्वरोगानां ४॥ ओं स्वस्त्यावतीमिदं दुर्ल
र्द्धर्षपत्नकस्य चितु ॥ लिखितकायपदगत्र्यं ।लि
खितकृत्यितंपूर्णा ॥ २५२ ॥ ॥ ॥ ॥ ओं॰ शिलिव
मर्कमानु । ओकिकाख्याय । नाम । वज्राख्याय
ल्पावक ४॥ अकृतवाञ्छलगने हपार्जे । कक्कल